8 September 2023 [YOUTH CONVENTION]

जिनवाणी की दुर्दशा

नुक्कड़ नाटक

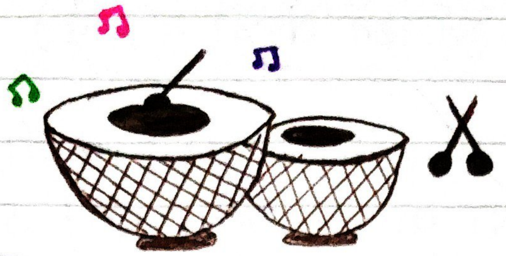

सुनो सुनो सुनो !!! सुनो सुनो सुनो !!!

नाटक देखो, नाटक देखो, नाटक देखो रे
जिनवाणी की दुर्दशा का नाटक देखो रे – 2

जिनवाणी माता की, जिनवाणी माता की,
तुम जय बोलो जय जिनवाणी माता की जय

सुनो सुनो सुनो !!! सुनो सुनो सुनो !!!

सुहानी: क्या सुना रहे हो?

तन्वी: हाँ भाई, मुझे भी बताओ, क्या सुना रहे हो?

(सुनो गौर से दुनिया वालो - तर्ज)

सुनो गौर से दुनियावालो, जिनवाणी के वचन संभालो,
आगे बढ़के मोक्ष को पा लो, सबसे आगे होगी ये
जिनवाणी - 2
इसमें कहा है जो तुम भी सुनो

अबोली: अरे भाई! क्या कहा है इसमें?

अनुप्रेक्षा: छह द्रव्य

सलोनी: सात तत्त्व

परिणति: अनेकान्त

राजुल: स्याद्वाद

सुहानी: और क्रमबद्ध पर्याय

कृति: इसमें क्या नया है! ये तो सब को पता है?

आकांक्षा: (Bundelkhandi Accent)
हमाए लाने पतो है जिनवाणी की महिमा का है,
तुमाए लाने पतो है जिनवाणी की महिमा का है पर
इ जनता को कुन पतो है की जिनवाणी की महिमा
का है।

लाब्धि: तो बताओ फिर जिनवाणी की महिमा क्या है!

(तर्ज- ओ देश मेरे....)

ओ जिनवाणी तेरी शान पे सद के
कोई धन है क्या, तेरे ध्यान से बढके
तेरे ज्ञान से रोशन, तेरे मान पे जिंदा
तु माता है मेरी, मैं बालक तेरा
है अर्ज ये हम जीवो की सुनकर के वाणी तेरी
मिथ्यात्व नशे और सम्यक ज्ञान हो
जब साथ में हो तु माता, शिवपद भी हमें बुलाता
तेरे संग से हम इस भव से पार हो
ओ जिनवाणी....

रिया: इतनी बडी-बडी बाते हमें समझ में नहीं आती, हम तो नहीं पढ सकते ये।

परिणति: बसsss इसी वजह से हमारी 'Bosing macine' खराब हो जाती है।

कृति: अरे! सठिया गये हो क्या?

तन्वी: हाँ! Bosing machine नहीं washing machine

सब: हाँ हाँ washing machine

कृति: अरे चुप! सबका दिमाख खराब हो गया है क्या? यहाँ बात जिनवाणी की चल रही है और कहाँ washing machine bosing macine कर रहे हो। :फोकु

Focus on Jinvani Guys!!!

सम्यग्दृष्टि: अरे भाई ! तुम जिनवाणी को समझने की कोशिश तो करो। ये तो साक्षात् जिनेन्द्र भगवान की वाणी है, जो हमें अनन्त सुख प्राप्त कराने का मार्ग बताने वाली है। परऽऽऽ लोग इसे समझना ही नहीं चाहते।

(तर्ज- जलवा - जलवा)

यहाँ भी देखो, वहाँ भी देखो
अब तो सारे जहाँ मे देखो
क्या ???

जिनवाणी की दुर्दशा

सलोनी: दुर्दशा ! कौन कर रहा है जिनवाणी की दुर्दशा ?

आकांक्षा: क्या कौन कर रहा है, हम और तुम ही तो कर रहे है जिनवाणी की दुर्दशा।

सलोनी: वो कैसे ?

आकांक्षा: जिनवाणी की व्यथा समझनेमें मैं असमर्थ हूँ उनकी व्यथा तुम उन्ही के मुँह से सुन लो -

प्रथमानुयोग -

कृति: मैं हूँ प्रथमानुयोग। छोटी - छोटी, प्यारी - प्यारी कहानियाँ बताकर जीवों को धर्म मार्ग में लगाता हूँ। पर आज तो कोई मुझे पढता ही नहीं। दादा-

सुहानी
तन्वी:
अबोन

दादी भी मेरी कहानियाँ अपने पोतो को नही सुनाते।
तो उनके आदर्श कौन बनेंगे, वो फिल्मी हीरो!

करणानुयोग

सुहानी: मैं हूँ करणानुयोग। मैं जीव और कर्म की उपयोगिता बताता हूँ लेकिन मुझे कोई पढता ही नहीं है। कहते है कठिन है कठिन है, इसमें बहुत गणित है, ऐसा कहकर मुझसे दूर हो जाते है।

चरणानुयोग

तन्वी: रुको! रुको! मुझे भूल मत जाना, मैं हूँ चरणानुयोग। मैं सबका आचरण सुधारता हूँ, पर मेरा आचरण किसी को पसन्द ही नहीं आता, अब तो सबको 'Fast food Fast life' चाहिए।

द्रव्यानुयोग

अबोली: मैं हूँ द्रव्यानुयोग। मैं साक्षात सीमंधर भगवान की वाणी से आया हूँ आपको सिद्दशिला तक ले जाने। लेकिन 'मैं आत्मा हूँ' ये बात तो कोई मानना ही चाहता। मानना तो छोडो कोई सुनना भी नहीं चाहता यदि समझ जाते तो निश्चित ही सुख-शान्ति पाते।

अबोली: पर अब वो पहले वाली बात कहा रहीं ? अब तो सब कुछ बदल गया है ?

(तर्ज - बदला - बदला (कव्वाली)

ना बदला मैं, ना बदला वो, ना बदला तु
अगर कुछ बदला है तो सिर्फ 'कम्बख्त'
ये वक्त है बदला
पहला था कबुतर अब है ट्विटर
पहली थी बूक अब है फेसबूक
पहला था टेलीग्राम अब है इंस्टाग्राम
बदला बदला बदला - 2
बदला बदला बदला - 2

अविनय

1) पैरो पे रखकर, थूँक लगाकर

2) झुठे मुँह से

3) नाभि के नीचे पकड़ना

4) अस्वच्छ हाथों से

After 1) देखो ये क्या कर रहा है, थूँक लगा के जिनवाणी पढ रहा है

सब: छी

After 2) अरे भैय्या! पानी तो पी लो, झुठे मुँह जिनवाणी नहीं छुते।

सब: (सिर पर हाथ ठोकना)

After 3) तनक ऊपर तो पकडो भैया!

अनुप्रेक्षा: इस प्रकार हम जाने अनजाने में जिनवाणी की अविनय कर देते है।

परिणति: जैसे हमारे देव और गुरु है वैसी ही जिनवाणी माता है। हमे जिनवाणी को कभी थूँक लगाकर नही पढना चाहिए और ना ही झुठे मुँह जिनवाणी पढनी चाहिए। हमें हमेशा स्वच्छ वस्त्र पहनकर ही जिनवाणी पढनी चाहिए।

लब्धि: हाँ! और जिनवाणी के सामने ना सोना चाहिए ना खाना चाहिए और सांसारिक बाते तो बीलकुल नही करनी चाहिए।

सुहानी: जब हम पुजन करते है तो चावल के कुछ कण जिनवाणी मे रह जाते है, जिससे त्रस जीवों की उत्पत्ति होती है।

रिया: बाप रे! इतने सारे नियम! ये सब पालेंगे तो जिनवाणी पढ ही नहीं पाएँगी।

समृद्धी: एक बात बताओ, मोबाईल युज करते हो?

रिया: हाँ, अभी तो खरीदा नया One Plus (Comedy accent)

समृद्दी: अरे वाह! तो जब मोबाईल खरीदा था Screen Guard लगाया होगा।

रिया: हाँ, बिलकुल

समृद्दी: मोबाईल कवर भी लगाया होगा

रिया: हाँ, हाँ

समृद्दी: Time to Time Update भी करते होगे ना

रिया: हाँ, उसके बिना तो जिंदगी ही ना चले।

समृद्दी: चंद पैसो से खरीदे हुए मोबाईल को इतना महत्त्व और जो साक्षात अर्हन्त भगवान की दिव्यध्वनि से आयी है ऐसी जिनवाणी को संभालने में इतनी दिक्कत! परिणति

आकांक्षा: अगर यही चलता रहा तो वो दिन दूर नहीं जब हमें जिनवाणी सुनना तो दूर देखने भी नहीं मिलेगी।

लब्धि: निराश क्यों होते हो भाई! हम अभी भी सुधर सकते है। जब समझेंगे तभी संभलेंगे।

(तर्ज- आशाएँ - आशाएँ)

आशाएँ आशाएँ - 2

कुछ करने की हो आस - आस
जब जिनवाणी की बात - बात

आशाएँ आशाएँ

करे हर कोशिश में हो वार - वार
करे दरियाओं को आर - पार

आशाएँ आशाएँ -
आशाएँ खिले दिल की
उम्मीदे हँसे दिल की
अब मुश्किल नहीं कुछ भी, नहीं कुछ भी...

परिणति: तो अब से हम ध्यान रखेंगे की

(तर्ज- Dettol Dettol)

ग्रन्थ लेने से पहले सदा हाथ धोना कभी भी ना भूलेंगे
विनय करे यदि सच्चे हृदय से तो ज्ञान भी सम्यक हो
जो माँ ने सिखाया वो सबको सिखाएँगे
Everybody साथ दो

सबसे ये अच्छी है सबसे ये सच्ची है
जिनदेशना जिन की हो

समृद्धी: रुको, रुको, रुको, रुको
अभी खतम नही हुआ है, हमारे भाई ने पहले कहा था ना, अरे यार! क्या कहा था, किसने कहा था?

आकांक्षा: (धक्का देते हुए) अरे !अरे! मैंने कहा था... मैंने

समृद्धी: (घबराकर) हाँ, हाँ तुम ही ने कहा था, धक्का क्यों दे रहे हो, बोलो बोलो

आकांक्षा: हमाए लाने पतो है जिनवाणी की महिमा का है, तुमाए लाने पतो है जिनवाणी की महिमा का है, पर इ जनता को कुन पतो की जिनवाणी की महिमा का है .... पर हमही की की को बते हैं।

(तर्ज- बिजली हम बचायेंगे)

पापा हो या मम्मी हो (3 claps)
या मम्मी की अम्मी हो (3 claps)
सबको हम बताएँगे (3 claps)
जिनवाणी समझाएँगे (3 claps)

अनुप्रेक्षा: पर कैसे?

(तर्ज- पोस्टर लगवा दो...)

ये खबर छपवा दो बाजार में (3 claps)

पोस्टर लगवा दो बाजार में
तुम जाओ शिविरों में, रम जाओ शास्त्रों में
शिविरों में शास्त्रों में - 3
क्योंकि
अज्ञान है संसार में....

आकांक्षा: इस प्रकार हम जिनवाणी का प्रचार - प्रसार करके जिनवाणी को जन जन तक पहुँचाकर, जिनवाणी की दुर्दशा होने से बचा सकते हैं।

(तर्ज - बादल पे पाव है)

शिवपथ पे पाव है, सिद्धों का गाँव है
अब तो भाई चल पडी अपनी ये नाव है - 2

जय - जिनेन्द्र